डॉ. विपीन कुमार

बी. ए. पार्ट - II / हिन्दी (ऑनर्स)

विषय : रामधारी सिंह 'दिनकर' (जीवन परिचय)

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर 1908 ई० को सिमरिया नामक स्थान पर हुआ। इनकी मृत्यु 24 अप्रैल 1974 को चेन्नई में हुई। हिन्दी के सुविख्यात कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' एक ओजस्वी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कवि के रूप में जाने जाते थे। उनकी कविताओं में छायावादी युग का प्रभाव होने के कारण श्रृंगार के भी प्रमाण मिलते हैं। दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे और दिनकर दो वर्ष के थे, जब उनका देहावसान हो गया। परिणामत: दिनकर और उनके भाई - बहनों का पालन - पोषण उनकी विधवा माता ने किया। दिनकर का बचपन - कैशोर्य देहात में बीता, जहाँ दूर तक फैले खेतों की हरियाली, बांसों के झुरमुट, आमों के बगीचे और कांस के बिस्तर थे। प्रकृति की इस सुषमा का प्रभाव दिनकर के मन में बचपन से ही बस गया। शायद इसीलिए वास्तविक जीवन की कठोरताओं का भी अधिक गहरा प्रभाव पड़ा।

दिनकर जी संस्कृत के एक पंडित के पास अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ करते हुए गाँव के प्राथमिक विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बोरो नामक ग्राम में राष्ट्रीय मिडिल स्कूल जो सरकारी व्यवस्था के विरोध में खोला गया था, में प्रवेश प्राप्त किया।

Scanned with CamScanner

यहीं से इनके मनो मस्तिष्क में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होने लगा था। हाई स्कूल की शिक्षा इन्होंने मोकामाघाट हाई स्कूल से प्राप्त की। इसी बीच इनका विवाह हो चुका था। इनके एक पुत्र भी थे। 1928 में मैट्रिक के बाद दिनकर ने पटना विश्वविद्यालय से 1932 में इतिहास में बी. ए. ऑनर्स किया।

पटना विश्वविद्यालय से बी. ए. ऑनर्स करने के बाद अगले ही वर्ष एक स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए, पर 1934 में बिहार सरकार के अधीन इन्होंने सब-रजिस्ट्रार का पद स्वीकार किया। लगभग नौ वर्षों तक वह इस पद पर रहे और उनका समूचा कार्यकाल बिहार के देहातों में बीता तथा जीवन का जो पीड़ित रूप उन्होंने देखा था, उसका तीखा रूप उनके मन को मथ गया। फिर तो एक कवि मन का ज्वार उमड़ा और 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती' और द्वंद्वगीत रचे गए।

1947 में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुजफ्फरपुर पहुंचे। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। 'दिनकर' 12 वर्ष तक संसद-सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन 1964 से 1965 ई० तक भागलपुर

Scanned with CamScanner

कवि विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई. तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया फिर वे दिल्ली लौट गए।

दिनकर के प्रथम तीन काव्य-संग्रह प्रमुख हैं- 'रेणुका' (1935 ई.), 'हुंकार' (1938 ई.) और 'रसवंती' (1939 ई.) उनके आरंभिक आत्म मंथन के युग की रचनाएँ हैं। इनमें दिनकर का कवि अपने व्यक्ति परक, सौन्दर्यान्वेषी मन और सामाजिक चेतना से उत्तम बुद्धि के परस्पर संघर्ष का तटस्थ द्रष्टा नहीं, दोनों के बीच से कोई राह निकालने की चेष्टा में संलग्न साधक के रूप में मिलता है।

इन मुक्तक काव्य संग्रहों के अतिरिक्त दिनकर ने अनेक प्रबंध काव्यों की रचना भी की है, जिनमें 'कुरुक्षेत्र' (1946 ई.), 'रश्मिरथी' (1952 ई.), तथा 'उर्वशी' (1961 ई.) प्रमुख हैं। कुरुक्षेत्र में महाभारत के शान्ति पर्व के मूल कथानक का ढाँचा लेकर दिनकर ने युद्ध और शांति का विशद, गंभीर और महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार भीष्म और युधिष्ठिर के संलाप के रूप में प्रस्तुत किये हैं। 1955 में नीलकुसुम दिनकर के काव्य में एक मोड़ बनकर आया। यहाँ वह काव्यात्मक प्रयोगशीलता के प्रति आस्थावान हैं। स्वयं प्रयोगशील कवियों को अजमाल पहनाने और राह पर फूल बिछाने की आकांक्षा उसे विह्वल कर देती है। नवीनतम काव्य-धारा से संबंध स्थापित करने की कवि की इच्छा तो

Scanned with CamScanner

स्पष्ट हो जाती है, पर उसका कृतित्व साथ देता नहीं जान पड़ता है। अभी तक उनका काव्य आवेश का काव्य था, नीलकुसुम ने नियंत्रण और गहराइयों में पैठने की प्रवृत्ति की सूचना दी। छह वर्ष बाद उर्वशी प्रकाशित हुई, हिन्दी साहित्य संसार में एक ओर उसकी कटु आलोचना और दूसरी ओर मुक्तकंठ से प्रशंसा हुई। धीरे-धीरे स्थिति सामान्य हुई इस काव्य-नाटक को दिनकर की 'कवि प्रतिभा का चमत्कार' माना गया। कवि ने इस वैदिक मिथक के माध्यम से देवता व मनुष्य, स्वर्ग व पृथ्वी, अप्सरा व लक्ष्मी अर्थात के संबंधों का अद्भुत विश्लेषण किया है।

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर पर फिर हमें गांडीव गदा,
लौटा दे अर्जुन भीम वीर — (हिमालय से)

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र से —

"क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दंतहीन विषहीन विनीत सरल हो।"
"मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान हस्तिनापुर आये, पांडव का संदेशा लाये।" —
(रश्मिरथी से)

इस प्रकार राष्ट्रकवि 'दिनकर' जी ने हिन्दी साहित्य में न सिर्फ वीर रस के काव्य को एक नयी ~~ऊंचाई~~ ऊंचाई दी, बल्कि अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का भी सृजन किया।

Scanned with CamScanner